



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Aja Ekadashi 2026 | पापों का नाश और मोक्ष की प्राप्ति दिलाने वाला अजा एकादशी व्रत | PDF

हिंदू धर्म में एकादशी तिथि का विशेष महत्व माना गया है। वर्षभर में चौबीस एकादशियाँ आती हैं, और प्रत्येक का अपना अद्वितीय आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व है। इन सभी में *अजा एकादशी* का स्थान अत्यंत पावन माना गया है। भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को *अजा एकादशी* कहा जाता है। इसे *अजा एकादशी* भी कहा जाता है। इस दिन भगवान विष्णु की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है और उपवास रखने का विधान है। धार्मिक मान्यता है कि इस व्रत को रखने से व्यक्ति के जीवन से पाप नष्ट होते हैं और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

अजा एकादशी क्या है?

अजा एकादशी भाद्रपद कृष्ण पक्ष की एकादशी है। शास्त्रों के अनुसार, इस तिथि को उपवास और भगवान विष्णु का स्मरण करने से समस्त पापों का क्षय होता है। *पद्म पुराण* और *ब्रह्मवैवर्त पुराण* में इस व्रत का विस्तार से वर्णन मिलता है। कहा गया है कि यह व्रत मनुष्य को स्वर्गलोक की प्राप्ति कराता है और जीवन के सभी संकटों को दूर करता है।



अजा एकादशी 2026 कब है?

पंचांग के अनुसार, भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी तिथि 6 सितंबर, रविवार को शाम 7 बजकर 30 मिनट से शुरू होगी और 7 सितंबर, सोमवार को शाम 5 बजकर 5 मिनट तक रहेगी। ऐसे में उदया तिथि के अनुसार अजा एकादशी का व्रत 7 सितंबर 2026, सोमवार को रखा जाएगा। इस दिन व्रत रखना अत्यंत शुभ और पुण्य फलदायक माना जाता है।

अजा एकादशी का महत्व

1. **पापों का नाश** – यह व्रत करने से पूर्व जन्मों के पाप भी नष्ट हो जाते हैं।
2. **मोक्ष की प्राप्ति** – व्रत रखने वाला व्यक्ति जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त होकर परम धाम को प्राप्त करता है।
3. **परिवार की समृद्धि** – व्रत करने से घर में सुख-शांति, धन-समृद्धि और सौभाग्य बना रहता है।
4. **स्वास्थ्य और मानसिक शांति** – उपवास और भगवान विष्णु के स्मरण से मन को स्थिरता और आत्मिक शांति प्राप्त होती है।
5. **कर्म शुद्धि** – व्रत का पालन करने से व्यक्ति का मन और आचरण शुद्ध होते हैं।

पौराणिक कथा (अजा एकादशी की कथा)

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी अजा नाम से प्रसिद्ध है।



तथा इसे अन्नदा एकादशी भी कहा जाता है। इस एकादशी के व्रत से जीव के जन्म-जन्मांतरों के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं, वहीं उनके संताप मिटने से भाग्य भी उदय हो जाता है। जिस कामना से कोई यह व्रत करता है, उसकी वह सभी मनोकामनाएं तत्काल ही पूरी हो जाती हैं। इस व्रत में भगवान विष्णु जी के उपेन्द्र रूप की विधिवत पूजा की जाती है।.... आगे पढ़ें

अजा एकादशी व्रत क्यों रखा जाता है?

1. **भगवान विष्णु की कृपा प्राप्त करने के लिए**
इस दिन उपवास करके और विष्णु जी का पूजन करने से भक्त पर भगवान की कृपा बनी रहती है।
2. **पाप मुक्ति के लिए**
यह व्रत पापों का नाश करता है। शास्त्रों में कहा गया है कि यह व्रत करने से हजारों यज्ञों और तीर्थ स्नानों के बराबर पुण्य मिलता है।
3. **मोक्ष की प्राप्ति के लिए**
यह व्रत जन्म-मरण के बंधन को काटकर आत्मा को परम धाम तक पहुँचाता है।
4. **कष्ट निवारण के लिए**
यदि व्यक्ति जीवन में दुखों से घिरा है, तो यह व्रत उसके संकट दूर करता है।



अजा एकादशी व्रत विधि

व्रत की तैयारी

- व्रत की शुरुआत दशमी तिथि से ही होती है। इस दिन से ही सात्विक आहार लेना चाहिए और व्रत की संकल्पना करनी चाहिए।
- ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए और मन को पवित्र रखना चाहिए।

पूजन-विधि

1. प्रातः स्नान – एकादशी के दिन प्रातःकाल स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
2. संकल्प – भगवान विष्णु के समक्ष व्रत का संकल्प लें।
3. पूजा – विष्णु भगवान की मूर्ति या चित्र के सामने दीप जलाएँ, गंध, पुष्प, धूप, नैवेद्य अर्पित करें।
4. मंत्र जाप – विष्णु मंत्र 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' या विष्णु सहस्रनाम का जाप करें।
5. कथा श्रवण – व्रत कथा का श्रवण या पाठ करना अनिवार्य है।
6. भजन-कीर्तन – दिनभर हरि नाम का जाप करें और रात्रि जागरण करना शुभ माना जाता है।



व्रत का समापन

- अगले दिन *द्वादशी तिथि* को व्रत का पारण किया जाता है।
- पारण सूर्योदय के बाद अन्न-जल ग्रहण कर या किसी ब्राह्मण को भोजन कराकर किया जाता है।

अजा एकादशी व्रत के नियम

1. इस दिन अनाज, दाल, चावल और मांसाहारी भोजन का सेवन वर्जित है।
2. लहसुन-प्याज भी नहीं खाना चाहिए।
3. व्रतधारी को झूठ, चोरी, निंदा और क्रोध से दूर रहना चाहिए।
4. मन को संयमित और ईश्वर के ध्यान में लगाना चाहिए।
5. ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है।

अजा एकादशी व्रत करने के लाभ

1. **आध्यात्मिक लाभ** – यह व्रत आत्मा को शुद्ध करता है और ईश्वर से जोड़ता है।
2. **धार्मिक पुण्य** – हजारों यज्ञों और तीर्थ यात्राओं के बराबर पुण्य की प्राप्ति होती है।
3. **कर्म शुद्धि** – जीवन के सभी पाप और दोष मिट जाते हैं।
4. **सुख-समृद्धि** – घर-परिवार में सुख, शांति और समृद्धि आती है।



5. मोक्ष – मृत्यु के बाद आत्मा को विष्णु लोक की प्राप्ति होती है।

6. मानसिक शांति – मन और विचारों में शुद्धता आती है और तनाव दूर होता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एकादशी व्रत

यदि इसे वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए, तो उपवास का शरीर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

- पाचन तंत्र को आराम – उपवास से पाचन तंत्र को विश्राम मिलता है।
- डिटॉक्सिफिकेशन – शरीर की विषैली तत्व बाहर निकल जाते हैं।
- मानसिक शांति – ध्यान और उपवास से मानसिक स्थिरता बढ़ती है।
- ऊर्जा नियंत्रण – साधारण आहार और ध्यान से शरीर और मन में ऊर्जा का संतुलन होता है।

अजा एकादशी व्रत हिंदू धर्म में अत्यंत पुण्यदायी और मोक्षदायी माना गया है। इसकी महिमा स्वयं भगवान विष्णु ने शास्त्रों में वर्णित की है। यह व्रत न केवल पापों का नाश करता है, बल्कि व्यक्ति को जीवन की कठिनाइयों से भी मुक्त करता है। राजा हरिश्चंद्र की कथा इसका सर्वोत्तम उदाहरण है।

इस व्रत का पालन करने से भक्त को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष – चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति होती है।

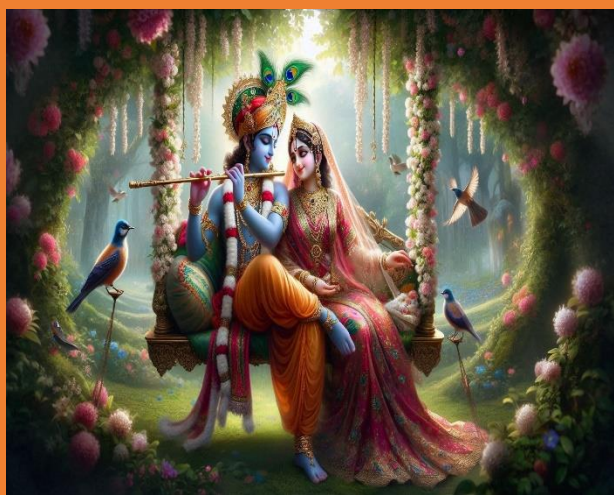


इसलिए प्रत्येक श्रद्धालु को अजा एकादशी व्रत श्रद्धा और विश्वास से अवश्य करना चाहिए।

RELATED ARTICLE



अजा एकादशी व्रत



श्री कृष्ण चालीसा



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

